ग्रीष्मकालीन शिविर

(शिविर : 16 मई से 1 जून 2013)

(रपट : 12 - 23 मई 2013)

रपट - रविकांत

तैयारी

इस शिविर की तैयारी के लिए आरंभ के तीन दिन काम करना तय किया गया था. इसमें आधा समय भाषा के लिए व आधा समय गणित के लिए रखा गया था. सबसे पहले शिक्षिकाओं के साथ बातचीत करके उनकी कक्षाओं के बच्चों के स्तर के आकलन के आधार पर दोनों विषयों के लिए अगले पंद्रह दिनों में हासिल किए जाने वाले लक्ष्य मोटे तौर पर तय किए गए.

कक्षा	भाषा	गणित
1 व 2	कविता की मदद से पढ़ना लिखना सिखाना	संख्या पद्धति पर काम कक्षा 1 के लिए 1 से 9 तक व कक्षा दो के लिए 1 से 50 तक
3	कविता की मदद से पढ़ना लिखना सिखाना	संख्या पद्धति 1 से 100 तक व जोड़ घटाव
4 व 5	कहानी, कविता वर्णन व नाटक के जरिए पढ़ने समझने व मन से लिखने व बोलने पर काम करना	जोड़ घटाव पर दो तीन तरीकों से काम करना और मुमकिन हो तो गुणा पर भी काम करना
एल्युमिनाई समूह	कहानी, कविता वर्णन व नाटक के जरिए पढ़ने समझने व मन से लिखने व बोलने पर काम करना, अपने लेखन का संपादन करना आदि	जोड़ घटाव व गुणा भाग पर तीन चार तरीकों से काम करना

आपसी बातचीत से इस खाके को तय करने के बाद कक्षा 1 - 2 तथा 3-4 और कक्षा 5- एल्युमिनाई समूह की शिक्षिकाओं के समूह बना दिए गए. उन समूहों की शिक्षिकाओं भाषा व गणित पर अगले पंद्रह दिन में किए जाने वाले कामों का एक खाका बनाया और अगले तीन से सात दिन की योजना विस्तार से बनाई और उससे जुड़ी सामग्री भी तैयार की. पुस्तकालय में मौजूद कहानी की किताबों व अन्य स्रोत सामग्री में से उपयुक्त सामग्री का चुनाव करके उसकी पर्याप्त संख्या में फोटोकापी भी करवाई गई. बच्चों के साथ काम करने का एक आम तरीका भी तय किया गया जिसका इस्तेमाल योजना बनाने में किया जाना था.

बनाई गई योजनाओं में से दो योजनाएं नमूने के तौर पर आगे दी जा रही है.

कक्षा एक की गणित की योजना का खाका

दिन	प्रकरण (1 से 9 तक के सभी काम)	मकसद	कार्यपत्रक का संदर्भ

1 व 2	1 से 9 तक ठोस चीजों से गिनना सिखाना क्रम से व बिना क्रम से	1 से 9 तक की संख्या की अवधारणा बनाना	पेज संख्या 5 व 9 (गिनना व मिलाना के लिए)
3	संख्या सुन कर या गिन कर चीजें उठाना		गणित कक्षा 1 कार्य पुस्तिका 1
4 व 5	संख्या पढ़ कर चीजें उठाना – क्रम से व बिना क्रम से		
6	संख्या सुन कर चीजें बनाना		
7	संख्या पढ़ कर चीजें बनाना – क्रम से व बिना क्रम से		पेज संख्या 7 – संख्या पढ़ना व चित्र बनाना
8	चीजें गिन कर संख्या बताना व लिखना		पेज संख्या 6 व 10 गिनना व लिखना
9	छोटा बड़ा – चित्रों व अंकों द्वारा	कम व ज्यादा चीजों में फर्क कर पाना	पेज संख्या 4 – ज्यादा चीजों वाले समूह में रंग भरना
10 व 11	पैटर्न से आकृतियाँ बनाना वर्गीकरण करवाना रंगों व आकार के अनुसार कम ज्यादा पर काम	कल्पना शक्ति का विकास	पेज संख्या 31,35,40 – गणित कक्षा 1 कार्य पुस्तिका 2

एल्युमिनाई समूह की भाषा व पठन कार्य की योजना का खाका

दिन	भाषा	पठन कार्य
1	कुछ शब्द व पात्रों की मदद से कहानी बनाना, पढ़ना व संपादन	किसी कहानी को पढ कर उसमें आई घटनाओं के क्रम पर बातचीत करना
2	वर्णन करना – घर से स्कूल आते वक्त रास्ते में आपने क्या क्या देखा	कहानी को पढ़ कर उसका सारांश लिखना व उसका संपादन करना
3	चार लाइन वाली अधूरी कविता पूरी करना	कार्य पत्रक के जरिए संज्ञा सर्वनाम पर काम करना
4	अधूरी कहानी पूरी करना	कहानी को विस्तार से लिखना
5	दो लाइन वाली कविता पूरी करना	शिक्षिका द्वारा सुनाई गई कहानी को अपने शब्दों में लिखना

6	बिना शीर्षक वाली कहानी को शीर्षक देना	कहानी में आए पात्रों घटनाओं आदि का चित्र बनाना
7	कहानी को चित्रों में दर्शाना	नई कहानी को डेढ़ पेज में लिखना
8	कहानी को घटना के क्रमानुसार लिखना	एकवचन बहुवचन व विशेषण पर काम करना
9	टुकड़ों को जमा कर कहानी लिखना	कहानी को नाटक में बदलना
10	अधूरी कहानी पूरी करना और उसका शीर्षक रखना	पात्र बदल कर कहानी बनाना
11	जहाँ पिकनिक पर गए थे, अगले दिन उसका वर्णन करना	कहानी पढ़ कर उस पर नाटक करना
12	कविता के टुकड़े जमाना	कहानी सारांश में लिखना
13	चित्रों की मदद से कहानी बनाना	विलोम शब्दों पर काम करना
14	पत्रिका बनाना	पत्रिका बनाना
15	पत्रिका बनाना	पत्रिका बनाना

शिविर में काम

तय योजनानुसार हर शिक्षिका रोज अपनी कक्षा में काम करती, उस काम का अवलोकन किया जाता और दोपहर के खाने के बाद कक्षा में किए गए काम के अवलोकन व शिक्षिका के खुद के कक्षा के काम के विश्लेषण पर बातचीत की जाती.

इस बार आरंभिक तैयारी पर ज्यादा वक्त लगाने और बच्चों के दाखिले की नीति को ठीक से लागू करने की वजह से पहले ही दिन से बच्चों के साथ ठीक तरह से अकादमिक काम की शुरूआत हो पाई. लेकिन कुछ शिक्षिकाओं के बीच में अवकाश लेने की वजह से दो कक्षाओं में काम करने का मामला थोड़ा सा अस्त व्यस्त सा रहा. हालांकि उन दोनों कक्षाओं के लिए वैकल्पिक व्यवस्था की गई थी. बाकी कक्षाओं में शिक्षिकाएं मोटे तौर पर नियमित काम करती रहीं.

इस बार कक्षाओं में किए जाने वाले कामों की योजना बनाते समय जिन चीजों पर काम किया गया और जिन मुद्दों पर बार बार ध्यान देने की जरूरत पड़ी, उन पर कक्षा अवलोकन के बाद एकाधिक बार बातचीत भी की गई. कई काम पहले से काफी बेहतर तरीके से हुए. इस रपट में उन कामों पर ज्यादा ध्यान केन्द्रित किया गया है जिन पर लगातार काम किया गया और उसमें अभी और काम करने की गुंजाइश है. आगे उनमें से कुछ मुद्दों का जिक्र किया गया है.

कक्षा प्रबंधन के कुछ मुद्दे

काम की भूमिका

अलग अलग कक्षाओं के अवलोकन में यह बात उभर का आई कि कई बार शिक्षक कक्षा में बगैर किसी भूमिका के काम आरंभ कर देते हैं. वे या तो सामग्री बांटने लगते हैं या एक आध बात कह कर अपना काम आरंभ करने की कोशिश करते हैं. इससे कई बच्चों को समझ में नहीं आता कि क्या हो रहा है या होने वाला है और वे काम से जुड़ नहीं पाते.

इस पर कक्षा अवलोकन में से उदाहरण लेकर इस पर बात की गई. जैसे एक कक्षा में शिक्षिका ने जाते ही बच्चों को कागज बांटे और बोर्ड पर सवाल लिख कर समझाने लगी. उस वक्त कुछ बच्चे शिक्षिका के काम पर ध्यान दे रहे थे और कई कुछ दूसरे काम करने में मशगूल थे. और इसके बाद जब शिक्षिका ने बच्चों को खुद करने के लिए काम दिया तो कई बच्चे आकर शिक्षिका से पूछने लगे कि क्या करना है.

इस पर बात की गई कि किसी काम की कक्षा में भूमिका ठीक से बांधने की जरूरत है. और उस भूमिका में सभी बच्चों को साथ जोड़ते हुए इस तरह से बात की जानी चाहिए कि उन्हें यह समझ में आए कि दिए गए काम को करना कैसे है. इसके साथ ही शिक्षिका भूमिका में यह भी बता सकती है कि आज हम क्या करने वाले हैं और उस काम को कैसे करेंगे. कब अकेले करेंगे, कब समूह में करेंगे. क्या सामग्री काम में लेंगे आदि. और अगर बच्चे भूमिका की बात को भी सुनने के लिए तैयार नहीं है तो आरंभ में पांच सात मिनट की कोई गतिविधि कर सकती है जिसमें सभी कोई सामूहिक काम करने के बाद शिक्षिका की बात को सुनने के लिए तैयार हो जाएं.

एक काम में शिक्षिका ने एक जगह से आने का वर्णन दो वाक्यों में करके बच्चों से कहा कि वे भी इस तरह से अपने घर से स्कूल के रास्ते का वर्णनकरें. इस पर बात की गई कि वर्णन की भूमिका बनाते समय शिक्षिका वर्णन विस्तार से करें और उस वर्णन में रास्ते में आने वाली कई चीजें शामिल करें.

शिक्षिकाओं के साथ यह बातचीत भी की गई कि भूमिका का एक मकसद दिए जाने वाले काम को समझना और उस काम को खुद करने या समूह में करने के लिए तैयार होना है. और वह भूमिका आगे के काम से जुड़नी चाहिए.

बच्चों के समूह बनाना

कुछ कक्षाओं खास तौर पर कक्षा 4 से बड़ी कक्षाओं में बच्चों के समूह इस तरह से बन रहे थे कि लड़के व लड़कियां अलग अलग काम कर रहे थे. इस पर शिक्षिकाओं के साथ समूह बनाने के तरीकों व मिश्रित समूहों को बनाने की जरूरत पर बात की गई. समूह बनाने के कौनसे तरीकों से बच्चों के मिश्रित समूह आसानी से बन सकते हैं व टिक सकते हैं, इस पर भी काम किया गया. छोटी कक्षाओं में शिक्षिकाओं ने समूह बनाने के लिए समूह की संख्या के बराबर कुछ फलों के चित्रों की पर्चियां बनाई. फिर बच्चों से कोई एक पर्ची उठा कर एक से फल की पर्ची वाले बच्चों को एक साथ इकट्ठा होने व फिर किसी तय जगह पर बैठने के लिए कहा. बड़ी कक्षाओं में गिनती गिन कर समूह बनाए गए.

यह बात भी की गई कि अगर शिक्षिका समूह बनाते समय बच्चों की पसंदगी के दबाव में निर्णय करती है तो बच्चे यह समझ जाएंगे कि वे दबाव डाल कर अपने मनपसंद समूह में जा सकते हैं और फिर हर बार वे इसकी कोशिश करेंगे. इसलिए बेहतर है कि तयशुदा तरीके से समूह बनाए जाएं व समूह बनने के बाद उनमें उस कालांश के लिए बदलाव न किया जाए.

विस्तृत योजना बनाना व उसे लागू करना

अप्रेल में किए गए प्रशिक्षण की ही तरह इस प्रशिक्षण में विस्तार से योजना बनाने पर रोज काम किया गया ताकि सभी शिक्षिकाएँ अपने अपने समूह के बच्चों के स्तर के मुताबिक योजना बनाने के काम में थोड़ी माहिर हो पाएँ. और कक्षा अवलोकन पर की गई बातचीत में कई बार योजना की समीक्षा भी की गई. उसमें यह बात सामने आई कि अगर शिक्षिका के पास विस्तार से व स्पष्ट योजना बनी हुई नहीं है तो कक्षा में काम करने में परेशानी आती है और अगर योजना बनी हुई है और उसे लागू नहीं करके कुछ दूसरे तरीके से काम करवा दिया गया है तो भी परेशानी आती है.

इस पर समूह के साथ यह बात एकाधिक बार की गई कि योजना बनाते वक्त कक्षा प्रबंधन की कई समस्याओं को हल करने की योजना बनाई जा सकती है. और उसे लागू करके उसकी समीक्षा करके उसमें आगे के लिए फेरबदल किया जा सकता है. यह बात भी की गई कि योजना बनाते समय इस बात का ख्याल भी रखें उसमें कुछ समय बच्चों के पास शिक्षक की मदद से और कुछ समय स्वतंत्र ढंग से काम करने का और कुछ समय साथियों की मदद से व कुछ समय

पूरी कक्षा के काम करने का हो. योजना में लगातार इन चारों कामों को व्यवस्थित तरीके से शामिल करने व उसे लागू करने की जरूरत होती है.

सार्थक स्वतंत्र काम

शिक्षिकाओं का इस बात की ओर भी ध्यान दिलाया गया कि स्वतंत्र तरीके से काम करने का मतलब यह नहीं है बच्चों को मशीनी तरीके से किए जाने वाले काम जैसे जोड़ के एक ही स्तर के 10-15 सवाल करना, गिनती लिखना, शब्दों की नकल करना, किताब में देख कर कहानी लिखना आदि, दे दिए जाएं. बल्कि ऐसे कामों की योजना बनाई जाए जिसमें बच्चों को खुद सोच समझ कर उन कामों को करना पड़े. जैसे दोबारा समूहीकरण करके जोड़ना/घटाना, जोड़ के सवाल को तीन चार तरह से हल करना, सीखे गए वर्णों(मात्रा व बिना मात्रा वाले) की मदद से नए शब्द बनाना व उनके अर्थ का अनुमान लगाना आदि. यह बात भी की गई कि ये काम बच्चे अपने आप तभी ठीक से कर पाएंगे जब उनके साथ इस काम की भूमिका ठीक से बनाई जाएगी. और उसके साथ ही जरूरत पड़ने पर बच्चों की समूहों में मदद की जाएगी.

सामग्री की पूर्व व्यवस्था

कुछ बार ऐसा हुआ कि शिक्षिकाओं के पास अपना काम आरंभ करने या काम जारी रखने के लिए पर्याप्त सामग्री कक्षा में नहीं थी. नतीजन शिक्षिका को उस वक्त सामग्री की व्यवस्था करने में लगना पड़ता और बच्चे उस समय खाली रहते.

इस पर यह बात एकाधिक बार की गई कि एक दिन पहले वसवेरे काम से पहले अपनी योजना के मुताबिक पर्याप्त सामग्री की व्यवस्था कर लें ताकि कक्षा में उसकी मदद से काम किया जा सके.

बच्चों की व्यक्तिगत व सामूहिक मदद में संतुलन

बच्चों के साथ काम करते वक्त एक समस्या बार बार यह आ रही थी कि शिक्षिकाएं अगर एक एक बच्चे को समझाने लगतीं तो कुछ बच्चे उसके आस पास आ जाते और वह बारी बारी से उनकी कापी में लिख कर या बोल कर समझाने लगती तो उनका ध्यान बाकी कक्षा की ओर से हट जाता. और बाकी बच्चे खाली समय का उपयोग अन्य गतिविधियों में करने लगते.

इस पर बात यह की गई कि अगर बहुत से बच्चों को अलग अलग समझाना पड़ रहा है तो इसका मतलब है कि जब पूरी कक्षा को समझाया गया, या तो वो ठीक तरह से नहीं था या उस

समय सभी बच्चों का ध्यान उस तरफ नहीं था. इसकी वजह से जब बच्चे काम करने के लिए अपने समूह में बैठते तो फिर से कई बच्चों को अलग अलग उसी काम को समझाना पड़ता था. इस तरीके से एक मुश्किल यह खड़ी हो जाती थी कि कई बार बच्चे शिक्षक के इंतजार में काम आरंभ ही नहीं कर पाते थे और उनका काफी समय खाली निकल जाता था.

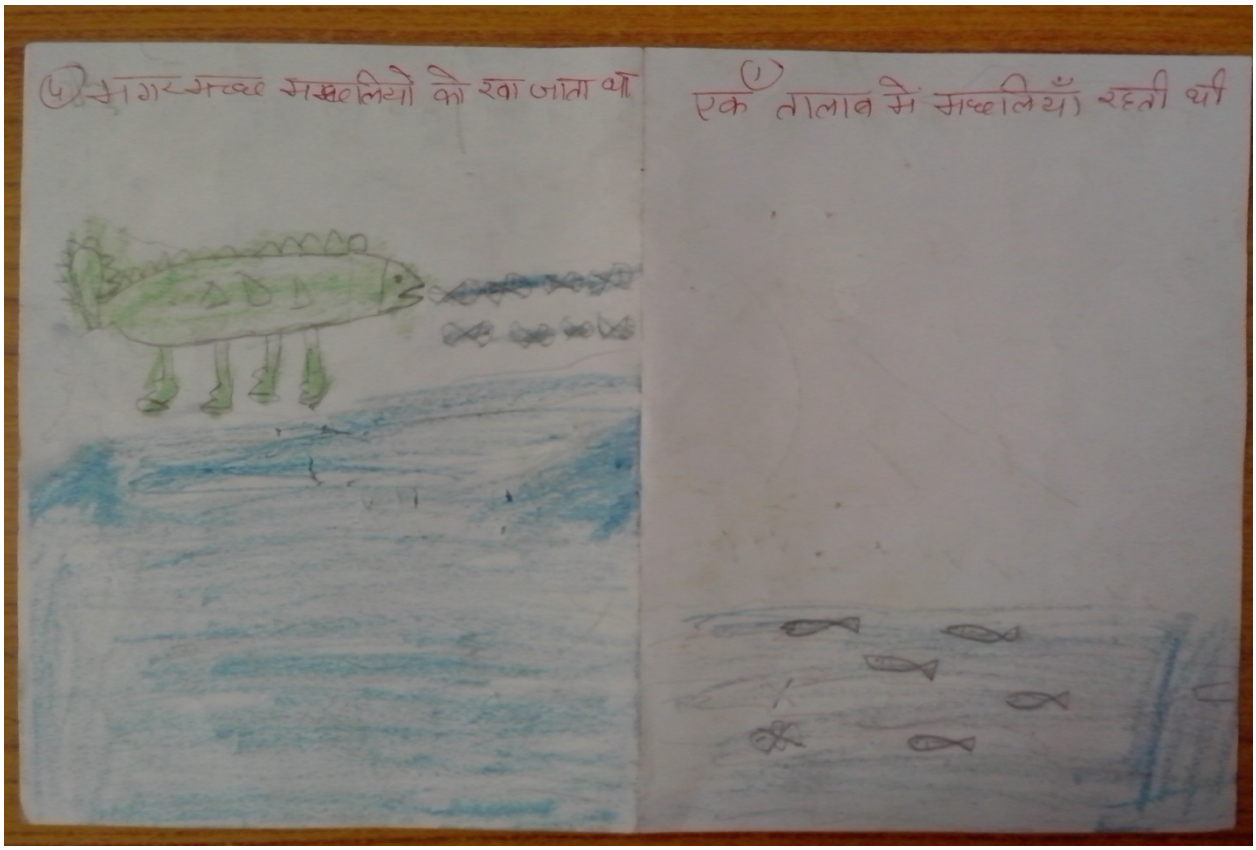

शिक्षिकाओं के साथ इस पर यह बात की गई कि वे योजना बनाते वक्त इस बात का ध्यान रखें कि उसमें काम की भूमिका ठीक से बनाएँ और उस वक्त इस तरह से काम व बात करें कि ज्यादातर बच्चों को बाद में किया जाने वाला काम समझ में आ जाए और वे उस काम को अपने आप कर सकें.

इसके बाद जब बच्चे उपसमूहों में काम करें तो वहाँ जाकर उनके काम का जायजा लें और कभी अगर ऐसा लगता है कि कुछ बच्चों को काम करने का तरीका समझ में नहीं आया है तो एक एक को अलग अलग समझाने के बजाय उन बच्चों को इकट्ठा करके समझाएँ.

बच्चों के पास कई बार खाली समय होना

कई अवलोकनों में यह बात आई कि बच्चों के पास काफी समय खाली होता है नतीजन वे कक्षा में खेलने लगते हैं या दूसरों को परेशान करने लगते हैं. इसकी अलग अलग घटनाओं को लेकर बातचीत की गई कि इसकी वजह क्या है. बातचीत में इसकी दो तीन प्रमुख वजहें उभर का सामने आए.

- जिन बच्चों के पास उनके स्तर से कम का काम होता है वे उस काम को तुरंत पूरा करके खेलने या दूसरों को परेशान करने में व्यस्त हो जाते हैं.
- जिन्हें काम की भूमिका बनाते वक्त काम समझ में नहीं आया हो वे भी उस काम को अपने आप आरंभ नहीं कर पाते.
- जिन बच्चों के पास उनके स्तर से मुश्किल काम होता है वे उस काम को अपने आप आरंभ नहीं कर पाते हैं.
- शिक्षक जब कुछ बच्चों को समझाने में तल्लीन हो जाता है तब बाकी बच्चों की जरूरतों का शिक्षक को पता नहीं चलता, उस वक्त भी ऐसा होता है.

शिक्षिकाओं के साथ इन चीजों पर बात की गई और अपनी अपनी कक्षा के अनुभवों के आधार पर योजना में बदलाव के सुझाव दिए गए. जैसे, हर शिक्षिका के पास बच्चों द्वारा किए जाने वाले काम के आगे व पीछे की कुछ वैकल्पिक योजना होनी चाहिए ताकि अगर बच्चे काम जल्दी कर लेते हैं तो उन्हें दूसरा काम दिया जा सके और काम नहीं कर पाते तो उन्हें सरल काम दिया जा सके.

बच्चों को व्यक्तिगत तौर पर समझाते समय भी बीच बीच में कक्षा के बाकी बच्चों की जरूरतों पर एक निगाह दौड़ाते रहना चाहिए, ताकि बच्चों की जरूरत का एक अनुमान लगा कर उस पर काम किया जा सके.

भाषा पर काम

भाषा के दोनों कालांशों की योजना बनाते वक्त इस बात का ख्याल रखा गया था कि उसमें चारों भाषाई क्षमताओं वाले काम शामिल किए जाएँ. और हर काम को समझ कर किया जाए. यह बात भी की गई कि कामों के चुनाव में एक या एक से ज्यादा क्षमताएँ भी एक साथ ली जा सकती है. लेकिन इस बात ध्यान रखें कि किस काम में किस क्षमता पर ध्यान दे रहे हैं.

भाषा में कुछ काम सभी कक्षाओं के साथ करने की योजना बनाई गई थी, जैसे पढ़ कर समझना व लिख कर समझाना. इन कामों के स्तर कक्षा के अनुसार अलग अलग रखे गए थे. शुरूआती कक्षाओं में चित्र वाली किताबें पढ़ने का काम रखा गया था. जिनमें लिखित सामग्री काफी कम थी, तो एल्युमिनाई समूह में एक दो पन्ने पर लिखी कहानी या कविता को बच्चों द्वारा खुद पढ़ कर समझने व उसका सारांश खुद लिखने का काम रखा गया था.

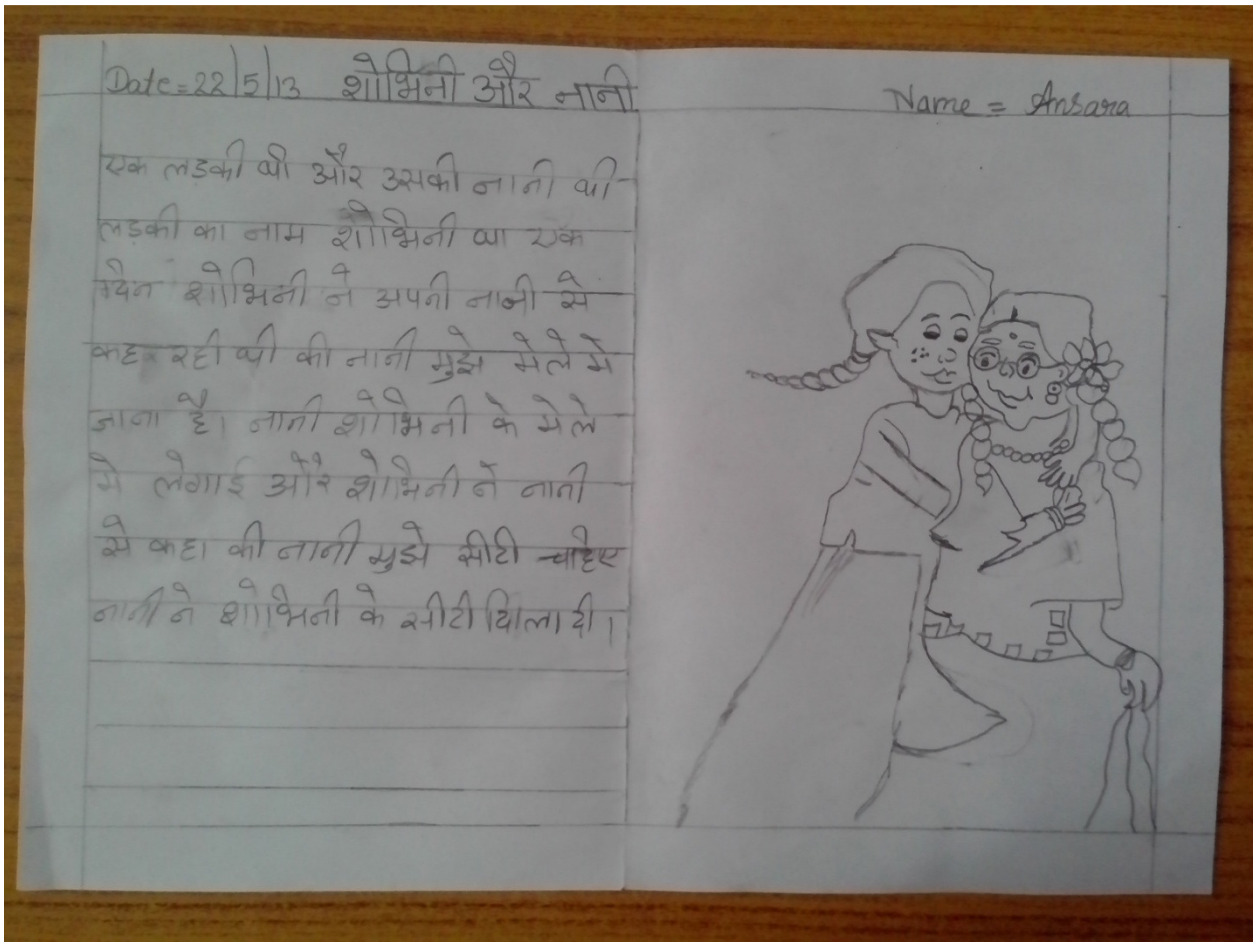

कक्षा 1 व 2 के काम में कविता चार्ट की मदद से पढ़ना लिखना सिखाने का काम किया गया. इसी के साथ मौखिक भाषाई क्षमताओं के काम भी इसमें लिए गए. जैसे आवाजों को तोड़ना व जोड़ना आदि. इस मौके का इस्तेमाल इस तरीके की बारीकियों को फिर से समझने के लिए किया गया हालांकि इस तरीके पर पहले भी दो तीन बार काम किया जा चुका था. लेकिन उसके कुछ बीच के कदम या तो धुंधले पड़ गए थे या कहीं छूट गए थे. एक बार फिर कविता की मदद से पढ़ना लिखना सीखने के कदमों को पहचाना गया उनके बीच एक खास क्रम के तर्क को समझा गया. और उस तरीके को काम में लेकर देखा गया. उसमें यह बात भी की गई कि इस तरीके का भी मशीनी तरीके से पढ़ना लिखना सिखाने में इस्तेमाल किया जा सकता है. इसलिए इस बात का ख्याल रखना जरूरी है कि इस में सार्थक तरीके से पढ़ना लिखना सीखने का काम हो. और मशीनी अभ्यास के बजाय सार्थक अभ्यासों के तरीके काम में लिए जाएँ और खोजे जाएँ. इन कक्षाओं के साथ कहानी सुन कर या पढ़ कर उसमें आई घटनाओं पर सामूहिक अभिनय का काम भी किया गया. इसके साथ ही कहानी पढ़ कर चित्र बनाने, चित्र देख कर कहानी बनाने, कहानी पढ़ कर शब्द लिखने आदि के काम भी किए गए.

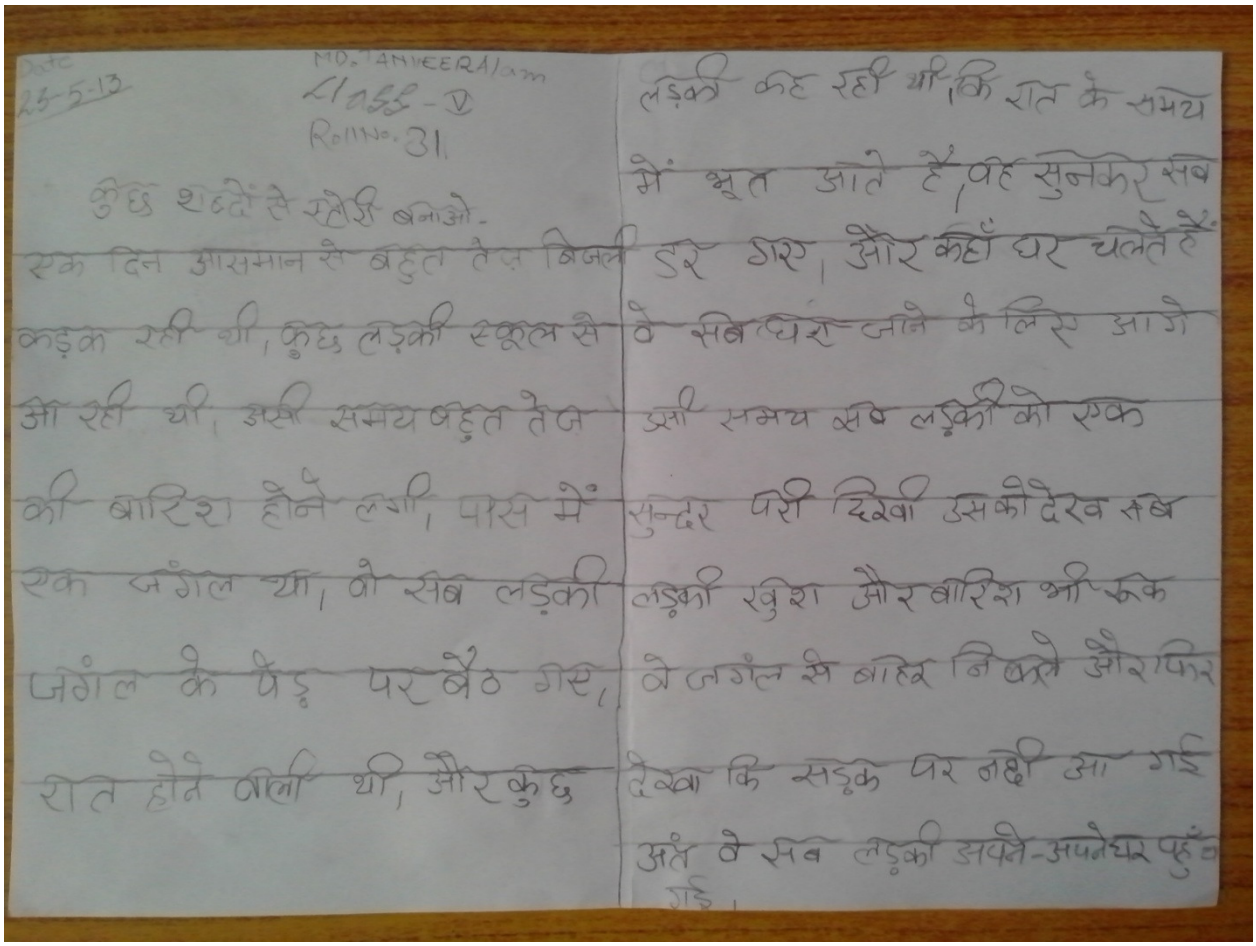

कक्षा 3 के साथ कुछ पढ़ना लिखना सीखने का और कुछ दूसरी भाषाई गतिविधियों पर काम किया गया.

कक्षा 4 व 5 में भाषाई गतिविधियों पर काम किया गया. उसमें फोकस इस बात पर था कि कहानी व कविता व वर्णन के जरिए बच्चों के पढ़ कर समझने व लिख कर समझाने के काम इसके साथ ही लेखनी को थोड़ा बेहतर किया जाए. इस समूह में कुछ बच्चे कक्षा 1 व 2 के स्तर के थे उनके साथ पढ़ना लिखना सीखने का काम किया गया. बाकी बच्चों के साथ उनके स्तर के मुताबिक पढ़ कर समझने व लिख कर समझाने का काम किया गया. इसमें कविता बनाना, कविता आगे बढ़ाना, कहानी बनाना, पढ़ कर कहानी समझना, कहानी पढ़ कर उसके चित्र बनाना, कहानी का सारांश करना, कहानी पर अभिनय करना आदि काम किए गए.

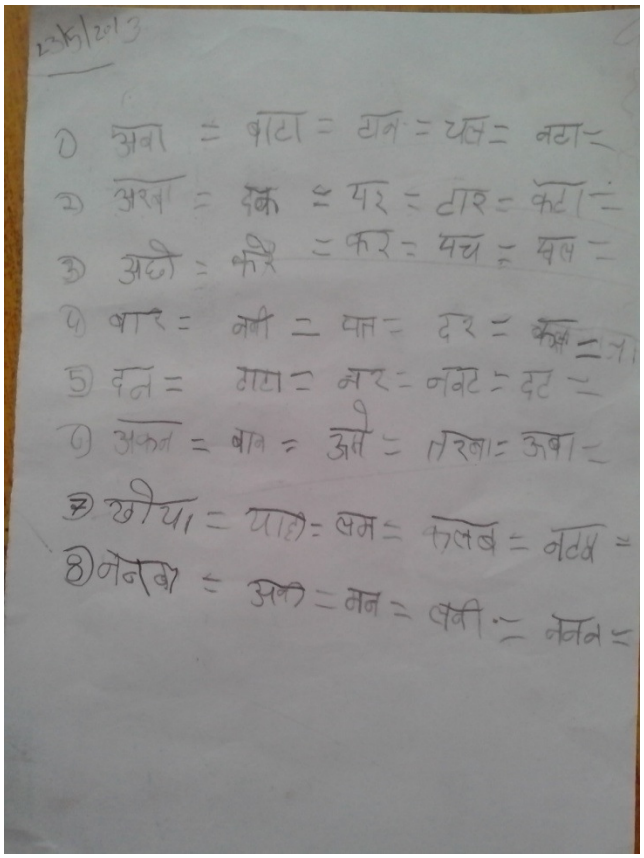

कुछ बच्चों को अकेले पढ़ कर समझने में दिक्कत थी, उनकी पढ़ने में मदद के लिए बच्चों को समूह बना कर पढ़ने व उस पर बात करने के लिए प्रोत्साहित किया गया. जिनको लिखने में दिक्कत थी उन्हें पूरे वाक्य के बजाय शब्दो को लिखने या चित्र बनाने के लिए प्रोत्साहित किया गया. इन कक्षाओं के कुछ ही बच्चे ए4 का आधा या तीन चौथाई पन्ना लिख पाते थे, कुछ बच्चे चार पांच वाक्य लिख पाते थे और कई तो शब्द ही लिख पाते थे. लेखन में संपादन की भरपूर गुंजाइश थी. लेखन को बेहतर करने के लिए बच्चों को खुद का लिखा पढ़ने व उसे बेहतर करके लिखने के लिए प्रोत्साहित किया गया.

एल्युमिनाई समूह के कुछ बच्चे ए4 का एक डेढ़ पेज तो अपने शब्दों में आराम से लिख लेते थे, कई बच्चे सिर्फ वाक्य लिख पाते थे, अनुच्छेद में लिखने का उन्हें अभ्यास नहीं था. इस समूह के सभी बच्चों के लेखन में संपादन की खूब गुंजाइश थी, अतः उस पर कई बार काम किया गया. कई बच्चे वाक्य पूरा नहीं लिखते थे. कई बच्चों के लेखन में तारतम्य नहीं था. वे कहानी को

अलग अलग वाक्यों में लिख रहे थे. इस पर बच्चों के साथ बातचीत की गई और उनका ध्यान इस ओर दिलाया गया. बच्चों को जैसा लिखा है वैसा पढ़ने और उसे हिंदी में किस तरह बोलते हैं उस पर ध्यान देने और अपने लिखे को सुधार कर लिखने के लिए कहा गया. इस समूह के साथ कविता, कहानी, वर्णन व नाटक पर कई सृजनात्मक काम किए गए. कई बच्चे अपने या किताब में लिखे को पढ़ने के बहुत अभ्यस्त नहीं थे, इस अवलोकन के आधार पर कक्षा में काम की योजना में बच्चों के पठन पर काम को शामिल करने की बात भी की गई. इस तरफ भी ध्यान दिलाया कि पढ़ने के साथ बच्चों से उसके अर्थ पर भी काम करवाएँ नहीं तो यह भी एक किस्म का मशीनी अभ्यास बन कर रह सकता है.

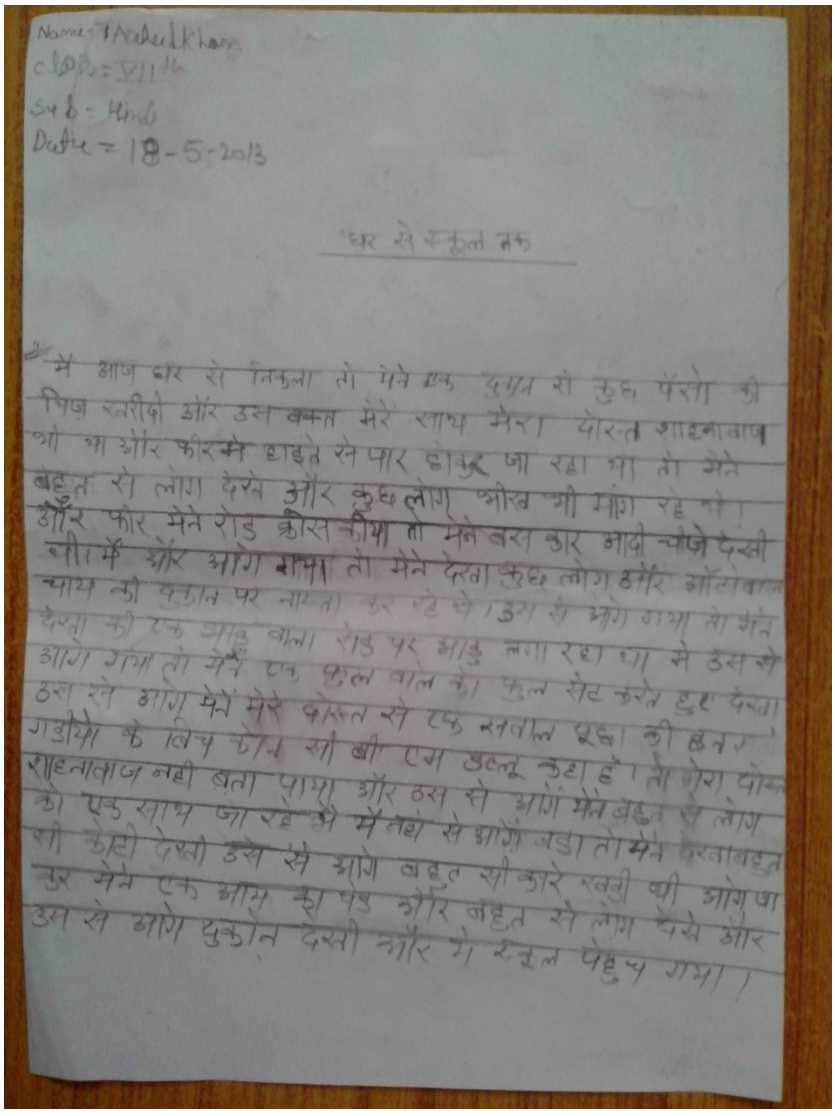

Name - Nahed Khan
Class = VIIth
Sub = Hindi
Date = 18-5-2013

घर से स्कूल तक

मै आज घर से निकला तो मेने एक दुकान से कुछ पैसो की चिज़ खरीदी और उस वक्त मेरे साथ मेरा दोस्त शाहनवाज भी था और फीर मै हाइवे से पार होकर जा रहा था तो मेने बहुत से लोग देखे और कुछ लोग भीख भी मांग रहे थे। और फीर मेने रोड क्रौस कीया तो मेने बस कार गाडी चीजे देखी थी। मै और आगे गया तो मेने देखा कुछ लोग और ऑटोवाले चाय की दुकान पर नास्ता कर रहे थे। उस से आगे गया तो मेने देखा की एक झाडु वाला रोड पर झाडु लगा रहा था मे उस से आगे गया तो मेने एक फुल वाले को फुल सेट करते हुए देखा उस से आगे मेने मेरे दोस्त से एक सवाल पूछा की इन गडीयो के बिच कोन सी बी एम डब्लू कहा है। तो मेरा दोस्त शाहनावाज नही बता पाया और उस से आगे मेने बहुत से लोग को एक साथ जा रहे थे मै वहां से आगे बडा तो मेने देखा बहुत सी कोठी देखी उस से आगे बहुत सी कारे खडी थी आगे जाकर मेने एक आम का पेड और बहुत से लोग देखे और उस से आगे दुकान देखी और मे स्कूल पहुच गया।

इस समूह में काम करते वक्त इस बात पर भी जोर दिया गया कि बच्चे अपना पढ़ा हुआ अपने साथियों को समझा पाएं. उस पर बातचीत करें. मन से लिखने वक्त कल्पनाशीलता व अपनी खुद की भाषा का इस्तेमाल करें बजाय किताब की भाषा की नकल करने के. इसी तरह उनके साथ यह बात भी की गई कि विचार के लिए तो वे अपने साथियों से बात करें लेकिन लिखें उस विचार को अपने शब्दों में ही.

गणित पर काम

गणित के कामों में संख्याओं व संक्रियाओं पर काम किया गया. इसमें भी कक्षावार काम के स्तर तय कर दिए गए थे. जैसे कक्षा 1 में एक से नौ तक की संख्याएँ सिखलानी थी तो एल्युमिनाई समूह में संक्रियाओं को कई तरह से करने का काम करना रखा गया.

कक्षा 1 से 3 में ज्यादातर काम संख्याओं पर किया गया. योजना इस तरह से बनाई गई कि बच्चे

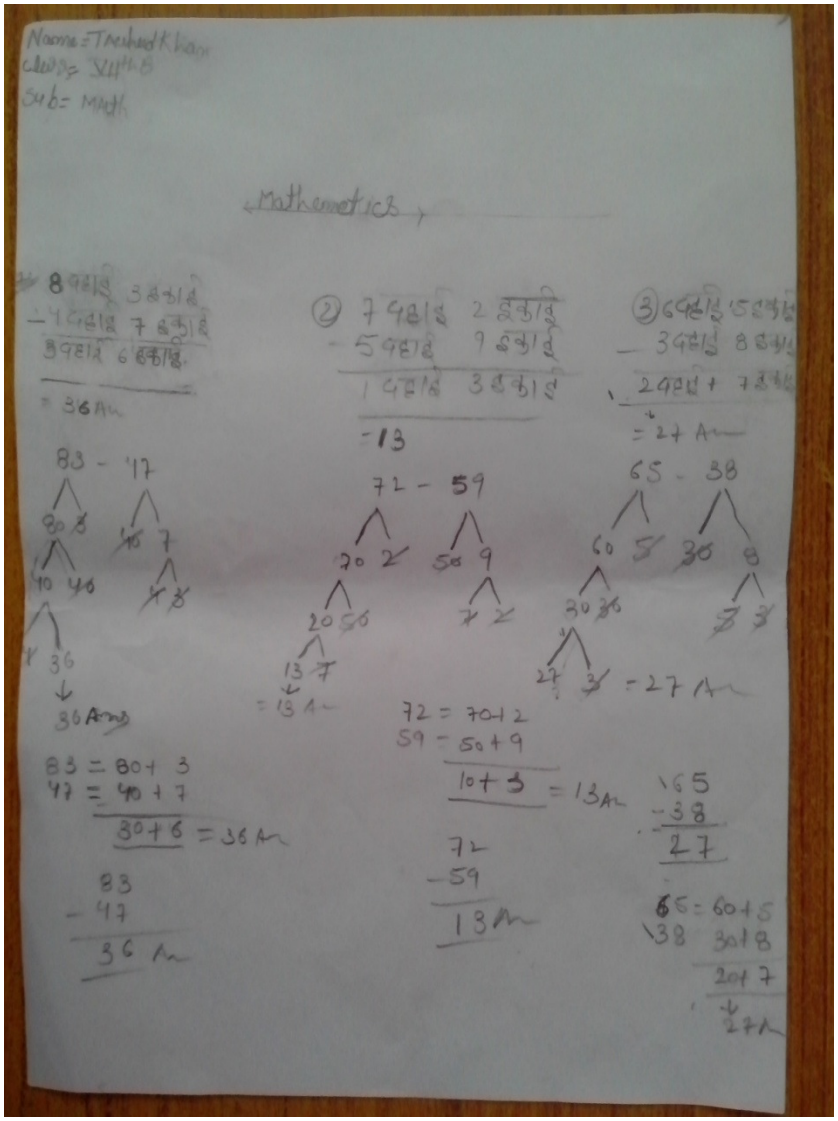

संख्याओं को समझ कर उस पर काम कर पाएं. एक ही संख्या को कई तरह से दर्शा पाएं. उस संख्या के अर्थ को समझ पाएं व पूछने पर बता पाएं. पहले काम लिए गए कई तरीकों को दोहराया गया और एक और तरीके को उसमें शामिल किया गया जैसे, 27 को हम कई तरह से दर्शा सकते हैं. 27 चीजें, 10 चीजों का बंडल व 17 खुली चीजें, 20 चीजों का बंडल व 7 खुली चीजें. इस बात को चीजों में चित्रों में अंकों में शब्दों में आदि दर्शाया व लिखा जा सकता है. यह बात भी की गई कि अगर बच्चा किसी संख्या का सभी संभव तरीकों से समूहीकरण कर सकता है तो उस संख्या को लेकर उसकी समझ गहरी होने की काफी संभावना रहती है.

इन कक्षाओं में किए जाने वाले काम की योजना बनाते वक्त यह बात की गई थी कि हर रोज दो तीन तरह के काम लिए जाएं जिसमें गिनना, पढ़ना और लिखना तीनों ही काम शामिल हों. छोटे बच्चों के लिए रंग भरने का काम भी साथ में लिया.

कक्षा 4 से एल्युमिनाई कक्षा के लिए संक्रियाओं के काम पर जोर दिया गया था. इसमें इस बात पर ध्यान दिया गया कि किसी भी संक्रिया से जुड़े सवाल को कम से कम तीन चार तरह से हल किया जाए ताकि उस संक्रिया के बारे में बच्चों की समझ बेहतर बन पाए. और बच्चों के पास किसी समस्या से जूझने के एक से ज्यादा तरीके उपलब्ध हों. इसके साथ ही किसी एक सवाल को एकाधिक तरीके से हल करने पर उस सवाल से जुड़ी दूसरी अवधारणाओं के बारे में सोचने समझने का मौका मिले. इसके लिए संख्या विस्तार करके जोड़ना, संख्याओं का दोबारा समूहीकरण करके पेड़ बना कर जोड़ना, किसी संख्या को इकाई दहाई सैकड़ा को शब्दों में लिख कर जोड़ना आदि तरीके काम में लिए गए.

दोबारा समूहीकरण करके जोड़ने का काम सिर्फ बच्चों ही नहीं उनकी शिक्षिकाओं के लिए भी गणित की अवधारणाओं के आपसी संबंधों को साफ करने व बेहतर करने वाला साबित हुआ. दोबारा समूहीकरण पर शिक्षिकाओं के साथ प्रशिक्षणों में काम किया गया था. उस पर एक बार फिर से तैयारी के वक्त काम किया गया. लेकिन जैसे ही शिक्षिकाओं ने बच्चों के साथ उस काम को करवाना आरंभ किया तो उनके सामने कई तरह की समस्याएं आईं. जैसे दो अंकों से बनने वाली संख्या में समूह कैसे बनेंगे और तीन अंकों से बनने वाली संख्याओं में समूह कैसे बनेंगे. समूह बनाने के बाद उन्हें जोड़ा कैसे जाएगा. कौनसे समूह बनाना अधिक उपयुक्त है और कौनसे समूह बनाना अनुपयुक्त है इस पर काम कैसे किया जाएगा. उन समस्याओं पर योजना व तैयारी की बैठक में विचार किया गया. तैयारी बैठक में किए गए काम से यह बात साफ हुई कि किसी सवाल को एक तरीके से हल करना आने का मतलब उस सवाल को दूसरे तरीकों से हल करना आ जाना नहीं होता. इसी तरह से अगर एक सवाल एक तरीके से दो अंकों की संख्या में हल करना आ जाने का मतलब उस सवाल को तीन अंकों की संख्या में हल करना आ जाना नहीं होता. कई बार बड़े भी दो अंकों में सवाल हल करने के तरीके को सीख लेने के बाद भी उसे तीन अंकों की संख्या पर ठीक से लागू नहीं कर पाते.

बच्चों द्वारा अलग अलग संख्याओं को अलग अलग तरह से समूहों में बांटने से पैदा हुए शैक्षिक मौके का इस्तेमाल शिक्षिकाएं बहुत कम कर पाईं. हालांकि कुछ शिक्षिकाओं ने बच्चों को दोबारा समूहीकरण करके सवालों को हल करना सिखा दिया. लेकिन दोबारा समूहीकरण के काम से गणितीय चिंतन के तौर तरीकों पर बहुत काम नहीं हो पाया.

इसी तरह से इबारती सवालों को बनाने का काम ज्यादातर एल्युमिनाई कक्षा के साथ किया गया. जिसमें बच्चों ने कुछ तयशुदा ढांचों में इबारती सवाल बनाए. इसमें किसी एक ढांचे का सवाल शिक्षिका बना देती और उसके बाद उसी तरीके के सवाल बच्चों से बनाने को कहा जाता. बच्चों द्वारा बनाए गए सवालों पर कक्षा में बातचीत करके उन सवालों में रह गई गड़बड़ियों को भी पहचाना गया.

गणित में काम करने के दौरान ध्यान दिए जाने लायक मुद्दे कुछ इस प्रकार थे, जिन पर शिक्षिकाओं के साथ एकाधिक बार बात की गई.

- बच्चों के साथ बातचीत इस तरह से करें कि उन्हें आगे किए जाने वाले काम का तरीका समझ में आए.
- बच्चों के जवाबों को सही या गलत ठहरा देने के बजाय उनसे उस जवाब तक पहुंचने का तरीका पूछ कर समझने की कोशिश करें और उसके मुताबिक उसके साथ काम या बात करें.
- बच्चों को जवाब बता देने के बजाय उनसे इस तरह के सवाल करें कि उनके जवाबों को देते वक्त वे सोच कर बताएँ और उसकी मदद से अपने काम को आगे बढ़ाएँ.
- इबारती सवाल को हल करने में मुश्किल पर बच्चों को यह बताने की बजाय कि वे अमुक काम कर दें, उनसे तीन बुनियादी सवाल पूछें, क्या दिया है, क्या पता लगाना है, और कैसे पता लगाना है. और इन सवालों के जवाब बच्चों को खोजने दें.
- बच्चे तुरंत सही जवाब दे दें तो उनके उस जवाब तक पहुंचने की प्रक्रिया पूछें और अलग अलग प्रक्रियाओं को पूरी कक्षा के सामने लाएं ताकि बच्चे यह समझें एक सवाल या समस्या को अलग अलग तरीके से हल करके सही जवाब तक पहुंचा जा सकता है और दूसरा कि सही जवाब तक पहुंचने के साथ साथ वहां तक पहुंचे कैसे यह जानना भी जरूरी है.
- पूरी कक्षा के साथ बातचीत करने से पहले कक्षा में ऐसा माहौल बनाएँ जिसमें सभी बच्चे एक दूसरे की बात सुन रहे हों. कक्षा में मचे शोरगुल में एक साथ की जाने वाली बातचीत से ज्यादातर बच्चों को कुछ समझ नहीं आता.
- बच्चों के लिए ऐसे चुनौतीपूर्ण काम का चुनाव करें जिसे वह जूझ कर पूरा कर पाए. बहुत आसान काम को बच्चे जल्द ही पूरा कर बोर हो जाते हैं. और बहुत कठिन काम को वे कर नहीं पाते तो उसे छोड़ देते हैं. दोनों ही हालातों में वे बहुत जल्द काम पूरा कर या काम छोड़ कर बैठ जाते हैं.

1